बाइबल की किताबें: भाग 2

अब तक हम बाइबल की पहली चार किताबों — उत्पत्ति, निर्गमन, लैव्यव्यवस्था और गिनती — का अध्ययन कर चुके हैं। आज, परमेश्वर की कृपा से, हम अगली चार किताबों को देखेंगे: व्यवस्थाविवरण, यहोशू, न्यायियों, और रूत।

5) व्यवस्थाविवरण (Deuteronomy)

व्यवस्थाविवरण मूसा द्वारा लिखा गया था, जब इस्राएली लोग प्रतिज्ञात देश की दहलीज़ पर थे। इसका उद्देश्य नई पीढ़ी के लिए वाचा की पुनः पुष्टि करना था। हिब्रू नाम “देवारिम” (अर्थात “वचन”) मूसा के अंतिम भाषणों को दर्शाता है, और ग्रीक नाम “देउतेरोनोमियन” का अर्थ है “दूसरी व्यवस्था”।

जो लोग मिस्र से निकले थे, वे अविश्वास के कारण जंगल में मर गए (गिनती 14:22–23)। केवल यहोशू और कालेब बचे। इसलिए यह पुस्तक उनके बच्चों को संबोधित करती है और उन्हें परमेश्वर की आज्ञाओं की याद दिलाती है।

इसका सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है शेमा — इस्राएल के विश्वास की घोषणा:

व्यवस्थाविवरण 6:4–7

“हे इस्राएल, सुन: यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा ही एक है।
तू अपने सारे मन, और अपने सारे प्राण, और अपनी सारी शक्ति के
साथ अपने परमेश्वर यहोवा से प्रेम करना। और ये बातें जो आज
मैं तुझ से कहता हूँ, तेरे मन में बनी रहें; और तू इन्हें
अपने बाल-बच्चों को सिखाना, और घर बैठे, मार्ग चलते, लेटते
और उठते समय इनके विषय में बातें करना।”

मुख्य विषय:

वाचा का नवीनीकरण (व्यव. 29:9–15)
आशीष और शाप (व्यव. 28)
सबसे बड़ी आज्ञा (मत्ती 22:37–38)

6) यहोशू (Joshua)

यहोशू की पुस्तक में, मूसा की मृत्यु के बाद परमेश्वर ने यहोशू को नेतृत्व सौंपा।

यहोशू 1:5
“तेरे जीवन भर कोई भी मनुष्य तेरे सामने ठहर न सकेगा; जिस प्रकार मैं मूसा के साथ था, उसी प्रकार मैं तेरे साथ रहूँगा; मैं तुझे न छोड़ूँगा और न त्यागूँगा।”

यह पुस्तक बताती है कि किस प्रकार परमेश्वर ने अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा किया।

यहोशू 21:43–45
“यहोवा ने इस्राएल को वह सब देश दे दिया जिसकी शपथ उसने उनके पितरों से खाई थी… यहोवा की सारी अच्छी प्रतिज्ञाओं में से
एक भी असफल न हुई, वे सब पूरी हुईं।”

मुख्य विषय:

आज्ञापालन से विजय (यहोशू 6 और 7)
परमेश्वर स्वयं योद्धा राजा है (यहोशू 10:11–14)
वाचा की विश्वासयोग्यता

7) न्यायियों (Judges)

यह पुस्तक इस्राएल के इतिहास को बताती है जब उनके पास राजा नहीं था। पाप → उत्पीड़न → पश्चाताप → उद्धार का चक्र बार-बार दिखाई देता है।

न्यायियों 21:25
“उन दिनों इस्राएल में कोई राजा न था; हर कोई अपनी-अपनी दृष्टि में जो ठीक जान पड़ता था वही करता था।”

मुख्य विषय:

मानव की दुष्टता (न्या. 2:11–13)
परमेश्वर की दया (न्या. 2:16–18)
अपूर्ण न्यायियों द्वारा मसीह की ओर संकेत

8) रूत (Ruth)

रूत की कहानी “जब न्यायियों का शासन था” उस समय की है। यह पुस्तक परमेश्वर की व्यवस्था और उसके वाचा-प्रेम (hesed) को दर्शाती है।

रूत 1:16–17
“जहाँ तू जाएगी, वहाँ मैं जाऊँगी, और जहाँ तू रहेगी, वहाँ मैं रहूँगी; तेरे लोग मेरे लोग होंगे और तेरा परमेश्वर मेरा परमेश्वर होगा। जहाँ तू मरेगी, वहाँ मैं मरूँगी और वहीं

गाड़ी जाऊँगी।”

मुख्य विषय:

परमेश्वर की योजना सामान्य घटनाओं में
निकट संबंधी छुड़ानेवाला (Boaz) जो मसीह का प्रतिरूप है
अन्यजातियों का समावेश (रूत मसीह की वंशावली में आती है – मत्ती 1:5–6)

इन चार पुस्तकों से शिक्षा:

परमेश्वर अपनी वाचा के प्रति विश्वासयोग्य है।
आज्ञापालन आशीष लाता है, और अवज्ञा न्याय लाती है।
अपूर्ण नेता मसीह की ओर संकेत करते हैं।
उद्धार की परमेश्वर की योजना सब जातियों को समेटती है।

रोमियों 15:4
“क्योंकि जो बातें पहले लिखी गईं, वे हमारी शिक्षा के लिये लिखी गईं, कि हम धीरज और पवित्रशास्त्र की शान्ति से आशा रखें।”

Share on:
WhatsApp